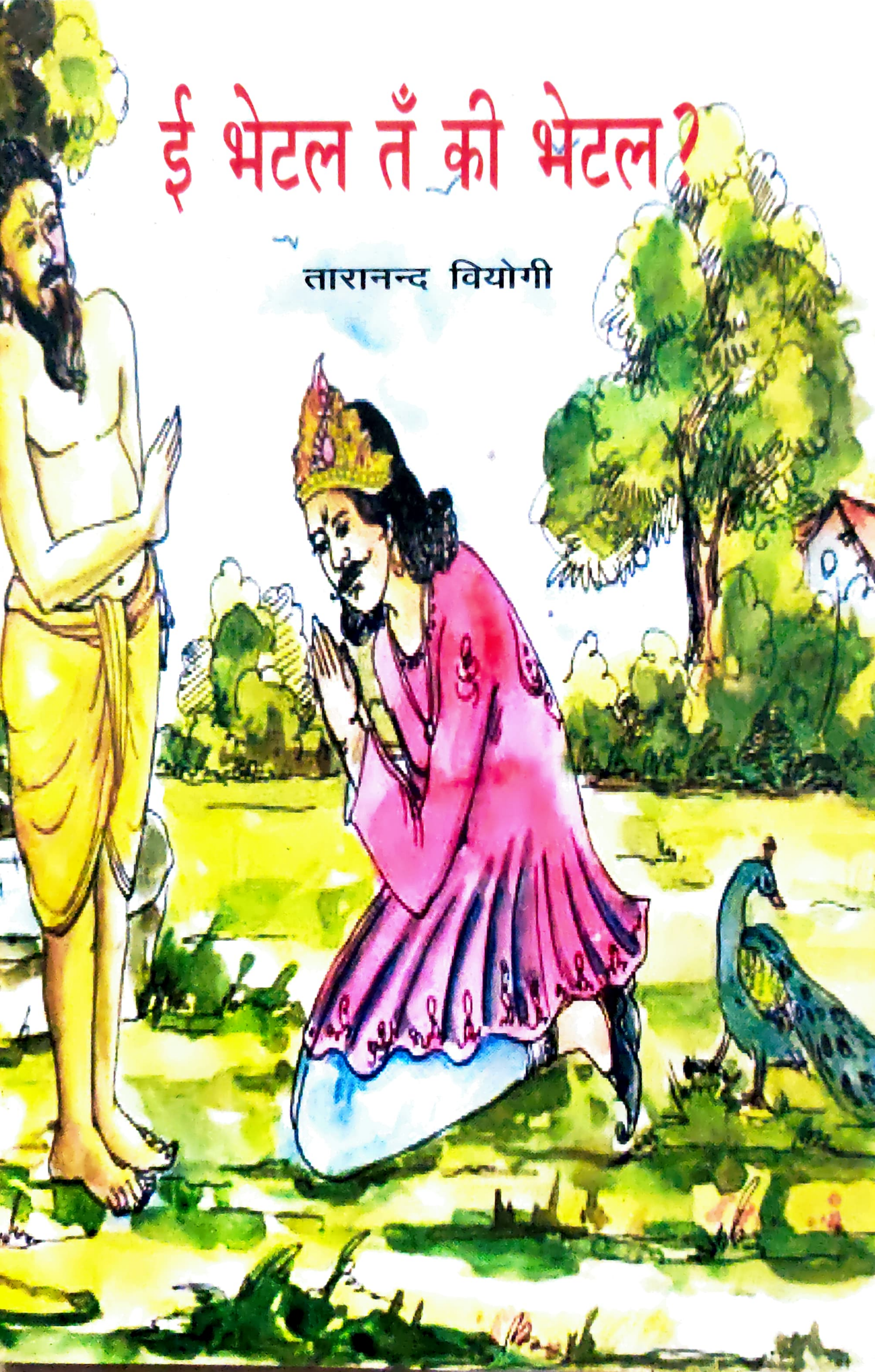


ई भेटल तँ की भेटल?
तारानन्द वियोगी

बाल-साहित्य : उपनिषद्-कथा

ई भेटल तँ की भेटल?

तारानन्द वियोगी



मैथिली लोक रंग
(मैलोरंग)
मधुबनी • दिल्ली

E Bhetal Tan Ki Bhetal? : Maithili Children Book by Taranand Viyogi, published by Maithili Lok Rang (MAILORANG) Delhi (2008), Rs. 15.

बदरिकाश्रम, महिषी
सहरसा, बिहार

प्रथम संस्करण : 2008 ई.

प्रकाशक
मैथिली लोक रंग (मैलोरंग)

संपर्क नं. : 09811774106, 09835096116, 06276223909
ई मेल : mailorang@gmail.com
वेबसाइट : http://www.mailorang.com
आवरण / इलेस्ट्रेशन : मनोज कुमार पासवान

ISBN : 978-81-904941-2-0

मूल्य : पन्द्रह टाका

शब्द संयोजन एवं मुद्रक : विकास कम्प्यूटर एंड प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

लेखक दिस सँ

जे विद्या अपने धरि सीमित करय, से बेकार। जे ज्ञान जीव-जगत सँ अलग क' दियय, से बेकार। दुनियाँ हमरे पर तँ टिकल नहि अछि। एहि म सबहक हिस्सेदारी छै। छोट-छीन चुट्टी-पिपरी हो तँ तकरो। मोट-डाँट हाथी-घोड़ा हो तँ तकरो। नान्हि टाक दूभि सेहो दुनियाँ केँ सुन्दर बनेबाक अरमान राखैए।

...आगू तँ ज्ञान आरो बढ़तै। हमर धियापुता हमरा सँ बेसी बुधियार हेता। आबै बला समय महान हएत। काल्हि पर भरोस रखबाक चाही। हमर आखिर मोले की अछि? भविष्य जे तय करत, सैह ने? अपना बुझने तँ हम बड़ ज्ञानी छी। मुदा ओ ज्ञान कोन कर्मक, यदि ओकर विकासे नहि होइ?

ई दुनू टा पाराग्राफ एही पोथी सँ लेल गेल अछि। एही पांतीक संग हम ई पोथी मिथिलाक भविष्यक कर्णधार लोकनि कें समर्पित करैत छियनि।

मैलोरंग कें आ प्रिय प्रकाश कें बहुत धन्यवाद दैत छियनि, जे एकरा प्रकाशित केलनि।

तारानन्द वियोगी

बदरिकाश्रम

महिषी (सहरसा)

5.8.08

ई भेटल तँ की भेटल?

बहुत पुरान जुगक ई कथा थिक। तहिया अपना देशक नाम 'भारत' सेहो नहि पड़ल रहै। आ तहिया गंगा-यमुनाक संग-संग सरस्वती नदी सेहो बहैत रहै। ताहि दिन मे एकोटा कतहु शहर नहि बसल रहै। आ, चारिम वेद सेहो रचल नहि गेल रहै। तहिया सब ठाम गामे गाम छल। सीधा-सादा लोक सब छल। कुल जमा तीन टा वेद छलै। लोक धरम-नेत सँ जीबथि। मान लेल मरथि।

आ, ओहि जुगक ओ बात! सब क्यो भला लोक छला। आदमी-आदमी मे बैर नहि छलै। ने कोनो जाति छल, ने वर्ण छल। जे जेहन काज करय, तेहन मान पाबय। सब क्यो एक दोसराक काज आबय। सबहक मदति ल' क' सब क्यो आगू बढ़य।

तहिया सब केँ सब सँ अपनापन छलै। हरिन आ मनुख संग-संग जीबय। बाघ आ बकरी एक घाट पानि

पीबय। घरेलू जानवर परिवारी जन जकाँ नेह पाबय।

ओहि जुग मे ज्ञान के पूछ सब सँ बेसी रहै। सब सँ पैघ धन की, तँ ज्ञान। ज्ञान पेबाक लेल लोक जतन करथि। घर-द्वार छोड़ि देथि। बहुत दुख सहथि। मुदा, जँ किनको ज्ञान प्राप्त भ' जाइन तँ ई बड़ भारी बात छल।



ज्ञानक खोज मे साधक लोकनि दिन-राति लागल रहथि। ई लोकनि ऋषि-मुनि कहाबथि। समाज मे हुनका सब सँ ऊँच स्थान देल जाइ छलनि। ओ वन मे रहथि। ओतय हुनक कुटी होइन। ओतय बहुतो रास ज्ञानी-विज्ञानी रहथि। हुनकर शिष्य लोकनि रहथि। तरह-तरह के पढाइ होइ। जीवनक रहस्य ताकल जाय। ज्ञान के तह खोलल जाय। ज्ञानी भ' क' शिष्य गाम घुरथि। गाम मे अपन जीवन शुरू करथि। दस लोक मे अपन ज्ञान बाँटथि। समाज मे अमन-चैन बढ़ाबथि। देशक विकास करथि।

ओम्हर कुटी मे निवास करथि—ऋषि-मुनि लोकनि। ओ सदा ज्ञानक खोज मे लागल रहथि। पाठ पढ़ाबथि। पुस्तक लिखथि। हुनकर लिखल पुस्तक उपनिषद् कहाबय।

खोजी लोकनि दूर-दूर सँ आबथि। कुटी पहुँचथि। गुरु सँ उपदेश लेथि। राजा सेहो कुटी पहुँचल करथि। गुरुक आशीष लेथि। हुनका सँ ज्ञान सीखथि।

आब, बात ई छै जे जतय दिन अछि, ततय रातियो अछि। जतय सत्य अछि, ततय फूसि सेहो अछि। जतय असली अछि, नकली सेहो ततहि अछि। ओहू जुग मे

से चलैत रहै। कतेको ढोंगी लोक सेहो गुरु बनि बैसल रहथि। आबनि किछु नहि, बनल छथि ज्ञानी!

एहने एकटा खिस्सा सुनबै छी, सुनू।

एकटा ऋषि छलाह। हुनकर नाम छलनि—ग्लाव। तीनू वेद पढ़ि चुकल रहथि। सब पोथी-पतरा बाँचि लेने रहथि। बहुतो लोक केँ अपन चेला सेहो बना चुकल रहथि। ज्ञानक उपदेश सेहो देथि। सभा मे प्रवचन सेहो करथि।

मुदा, अस्सल ज्ञान जकरा कहल जाइ छै, से एखन धरि हुनका भेटल नहि रहनि। भितरका अनुभव एखन धरि चखि नहि सकल रहथि। जल मे, थल मे एक्के देवक बास अछि। जीव-जगत मे, गाछ-बिरीछ मे सगरो वैह समाएल छथि। के छोट, के पैघ? एहि सभ कथूक भेद ओ एखन धरि पाबि नहि सकल रहथि। एही द्वारे हुनका मन के मैल नहि साफ भेल रहनि। मन मे घमंड छलनि। नीक लोक सँ डाह करथि। महान लोकक कुचेष्टा करथि।

एक बेरका बात थिक। ग्लाव मोद्‌गल ऋषिक आश्रम मे गेला। मोद्‌गल छला महान गुरु। ओ असली ज्ञानी रहथि। विख्यात सेहो बहुत रहथि। लोक हुनक

पूजा करनि। राजा सेहो हुनकर दर्शन पाबि गदगद होथि।

ओहि आश्रम मे देश-विदेशक बहुतो शिष्य निवास करै छला। ओ सब नाना प्रकारक विद्या पढ़थि। ओतय ज्ञानक सागर लहराइत छल। राति-दिन ज्ञानेक चर्चा।



ओतक सुग्गा-मेना सेहो वेदपाठी भ' गेल छल, बुझू।

से एहन अनूप जगह देखलनि ग्लाव। हुनकर अत्मा खंहरय लगलनि। डाह जोर मारय लगलनि। ओ मोद्‌गल कें हीन साबित करबाक तरकीब सोचय लगला।

एक आश्रमवासी कें सुना क' ओ बजला—'हुँह, मोद्‌गल तँ अपन शिष्य सबहक जीवन बेरबाद क' रहल छथि। हुनका आबै की छनि जे ओ पढ़ौता। ओ तँ मूर्ख छथि, सब कें मूर्ख बना रहल छथि।'

संजोगक बात! सुननिहार छला मोद्‌गल ऋषिक शिष्य। ओ अपन गुरु कें कह' गेला—'गुरुदेव, आइ जे अतिथि आएल छथि, से अहाँ कें मूर्ख कहै छथि। ओ मानै छथि जे अहाँ कें किछु नहि आबैत अछि।'

मोद्‌गल कें बड़ अचम्भा लगलनि। ओ पुछलखिन—'ओ ज्ञानी छथिन, यौ?'

शिष्य बजलाह—'जी गुरुदेव! हम हुनकर एक शिष्य कें पुछने रहियनि। ओ तीनू वेदक पंडित छथि। प्रवचन सेहो करै छथि।'

मोद्‌गल कहलखिन—'अहाँ एकटा काज करू वत्स!

हुनकर एकटा शिष्य कें बजा लाउ। जे सब सँ बुझनूक होथि, हुनका बजाएब।'

शिष्य विदा भेला। अतिथिशाला मे सब क्यो ठहरल रहथि। ओतय ग्लाव सेहो छला। ओ एखन धरि मोद्गलेक कुचेष्टा मे लागल रहथि। अपन शिष्य सब मे घृणा भरि रहल रहथि।

शिष्य हुनका प्रणाम केलखिन आ बजला—'हमर गुरुदेव अपनेक बुझनूक शिष्य कें बजौलनि अछि।'

ग्लाव अपन सब सँ योग्य शिष्य कें चुनलनि। ओ बुझनूको छल आ होशियार सेहो। ओकर नाम छलै—सुतापी। ओकरा मोद्गल लग पठाओल गेलै।

सुतापी ऋषि महाराज लग पहुँचल। हुनका प्रणाम केलकनि। तखन चुपचाप ठाढ़ भ' गेल। ऋषि कहलखिन— 'आउ वत्स, बैसू। हमरा किछु पुछबाक अछि।'

सुतापी बाजल—'जी, पूछल जाय।'

मोद्गल पुछलखिन—'अहाँ अपना गुरुक संगें कते दिन सँ रहै छी?'

सुतापी—'जी, दू बरख सँ।'

मोद्गल—'अहाँक गुरु की सब पढ़बै छथि बाउ?'

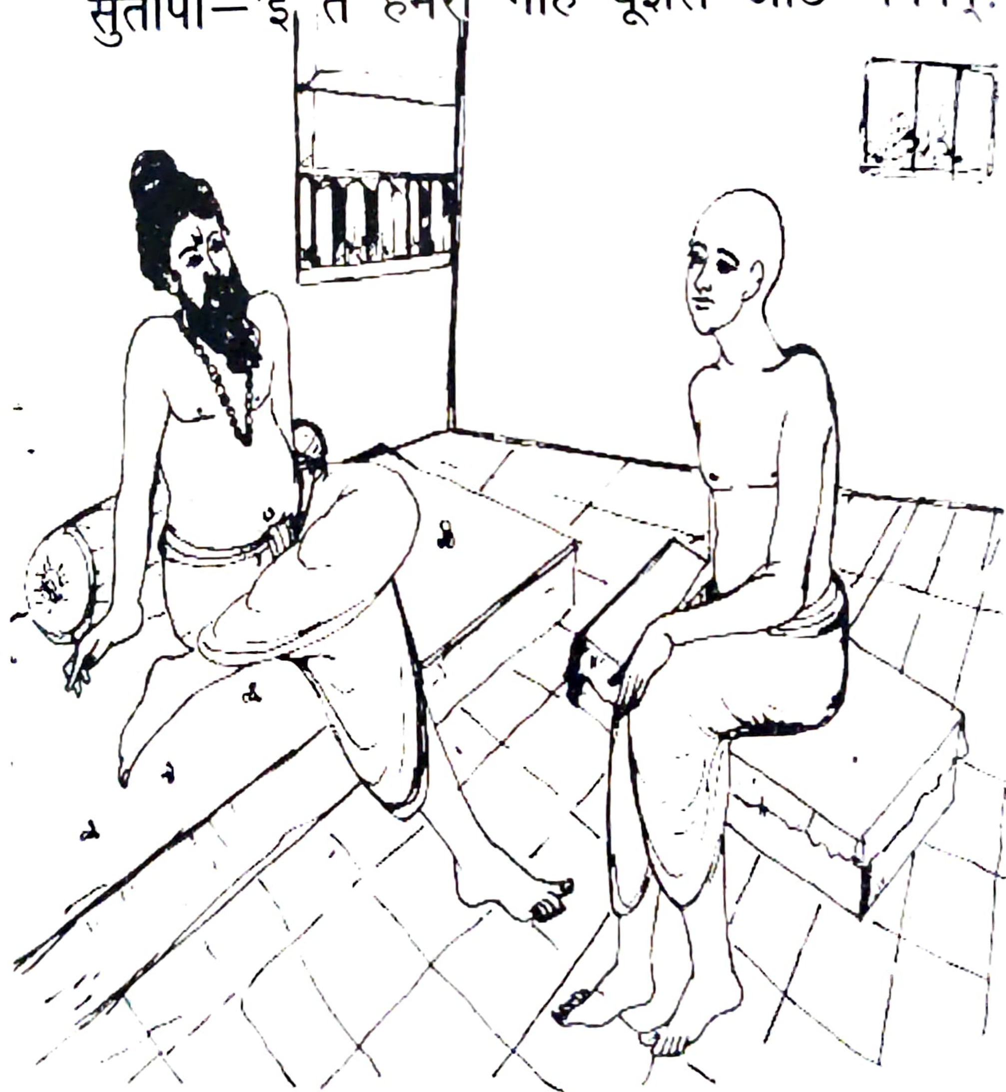
सुतापी—'ओ तीनू वेद पढ़बै छथिन।'

मोद्गल—'आर? आर की सब पढ़बै छथि?'

सुतापी—'आर की पढ़ेथिन? तीनू वेद पढ़बै छथिन।'

मोद्गल—'हुनकर की खोज छियनि, वत्स!'

सुतापी—'ई तँ हमरा नहि बूझल अछि भगवन्!



मुदा, प्रवचन करै छथिन। बड़ी-बड़ी दूरक लोक हुनकर प्रवचन सुनय आबै छथि।'

मोद्‌गल चुप भ' गेला। मोनेमोन किछु सोचय-विचारय लगला। तखन कहलखिन—'आगू चारिम वेद आबय बला छै वत्स! ओकरा मादे अहाँक गुरु की कहै छथि? कोना-की रहतै ओहि मे? ओकर विधान की हेतै? विकासक कोन रूप रहतै? अहाँकेँ तँ बतेने हेताह। हुनकर की कहब छनि?'

सुतापी किछु उतारा नहि द' सकल। एहि मादे ओ किछुओ नहि जानै छल। गुरु कहियो बतेने नहि रहथिन। ओ बाजल—'हमरा नहि बूझल अछि भगवन्! एहि सम्बन्ध मे गुरुदेव हमरा किछु नहि कहने छथि।'

मोद्‌गल कें अचरज लगलनि—'किछु नहि कहने छथि? कनेको नहि?'

सुतापी बजला—'नहि भगवन्। मुदा ओ जनैत हेथिन जरूर। जँ आदेश हो तँ हुनका सँ पूछि क' बता सकै छी।'

मोद्‌गल कहलखिन—'हँ वत्स! सैह करू।'

सुतापी ग्लाव मुनि लग एला। ग्लाव पुछलखिन—'की बात छलै? की सब पुछै छला?'

सुतापी अपन गुरु कें सब बात कहलखिन। तखन, समाद सुनेलखिन—'ओ पुछै हथि जे आगू चारिम वेद आएत। ओहि मे की सब रहतै? की विधान हेतै? विकासक रूप की रहतै? अपने कहल जाय तँ हम हुनका सुना देबनि।'

प्रश्न सुनि क' ग्लाव हँसय लगलाह। तखन ओ मोद्‌गल के निन्दा करय लगला। अपन चेला सब कें कहलखिन—'मूर्खक की लक्षण होइ छै, देखि लिय'। जे आइ सामने अछि, तै पर ओ टिकत नहि। जे नहि अछि, उनटे तकरे चिन्ता करत।'

सुतापी बाजल—'अपनेक की आज्ञा गुरुदेव! हुनका की बताएल जाय?'

ग्लाव कहलखिन—'एहि मे एते सोचबाक कोन काज? जे कहि रहल छी, सैह जा क' कहियनु। कहबनि जे चारिम वेद कहियो नहि आएत। तीन वेद कोन कम भेलै जे चारिम लेल ओ झखै छथि!'

सुतापी आपस मोद्‌गल लग पहुँचल। मोद्‌गल स्वागत केलखिन—'आउ आउ वत्स! की? गुरुदेव संग गप भेलै?'

सुतापी—'जी, भेलै।'

मोद्‌गल—'हुनकर की मत छनि?'

सुतापी—'ओ कहै छथिन जे चारिम वेद कहियो नहि आएत।'

मोद्‌गल—'की कहलहुँ? कहियो नहि आएत?'

सुतापी—'जी, कहियो नहि। हमर गुरुदेव कहलनि अछि—तीन वेद कोन कम भेलै जे अपने चारिम लेल झखै छी!'

मोद्‌गल—'एहन बात ओ कहलनि अछि यौ?' हुनका विश्वास नहि भ' रहल छलनि। ओ चिन्ता मे पड़ि गेला—क्यो असली ऋषि एना कहता? एहि तरहेँ सोचता? सत्य सँ एत्तेक दूर?

हुनका गुनधुन मे पड़ल देखि क' सुतापी बाजल—'हमरा आब की आज्ञा होइ छै?'

मोद्‌गलक मोन कने थिर भेलनि। हुनका मुँह पर कठोरता आएल। एक नजरि ओ सुतापी दिस तकलनि। फेर बजला—'बाउ, अहाँक गुरुजी कहै छथि—चारिम वेद कहियो नहि हएत। तँ की विकास रुकि जेतै? संसारक पहिया ठमकि जाएत? ज्ञानक प्रगति बन्द भ' जेतै?'

सुतापी बजला—'हम की कहू भगवन्! मुदा हमर गुरुजी तँ सैह कहै छथिन।'

मोद्गल बजला—'देखू वत्स! आइ जे जतबा अछि, काल्हि तकरा सँ पैघ हएत। तकरा सँ महान हएत। विकसित हएत। संसार चलायमान छै पुत्र! गतिये सत्य थिक। विकासे सत्य थिक।'

कनेक ओ थमला। फेर कहलखिन—'आगू तँ ज्ञान आरो बढ़तै। हमर धियापुता हमरा सँ बेसी बुधियार हेता। आबै बला समय महान हएत। काल्हि पर भरोस रखबाक चाही बाउ! हमर आखिर मोले की अछि? भविष्य जे तय करत, सैह ने? अपना बुझने तँ हम बड़ ज्ञानी छी। मुदा ओ ज्ञान कोन कर्मक, यदि ओकर विकासे नहि होइ?'

सुतापी किछु बुझलक, किछु नहियो बुझलक, ओ टुकुर-टुकुर ऋषिक मुँह ताक' लागल।

ऋषि बजला—'जे सत्य केँ जनैत अछि, से यैह कहत। ओ भविष्य केँ बाँझ कोना कहि सकैत अछि? मुदा, अहाँक गुरुजी तँ सैह कहैत छथि। नहि?'

सुतापी—'जी, सैह कहै छथिन।'

मोद्गल—'हम हुनकर बहुत आदर करै छियनि बाउ। हम बुझै छलहुँ, ओ आबैबला जुगक महापुरुष हेता। ओ सत्यक खोज करता। ज्ञानक विकास करता। मुदा ओ से क' सकता?'

सुतापी किछु नहि बाजल। चुपचाप बैसल रहल।

बाहर मेघ गरजल। तखन, मोर बाजल। दूर कतहु सँ बाछीक पुकार सुनाइ पड़ल—'बाँऽऽ बाँऽऽऽ'। बाछी अपन माय केँ बजबैत हएत।

मोद्गल बजला—'आ, जनै छियै बाउ? अहाँक गुरुजी केँ हम आदर सँ बजौने रहियनि। सोचने रही—हमर बच्चा सभ हुनका सँ ज्ञान सिखता। मुदा ओ तँ हमरे मूर्ख कहै छथि!'

सुतापी केँ लाज लागल। ओ मूड़ी गोंति लेलक।

बाहर फेर मेघ गरजल।

मोद्गल बजला—'हमहूँ कोनो महापुरुष नहि छी बाउ! साधारण आदमी छी। मुदा किछु खोज मे लागल छी। अहाँक गुरुजी तीन वेद पढ़बै छथि। हमहूँ तीन वेद पढ़बै छी। अहाँक गुरुजी प्रवचन करै छथि। हमहूँ प्रवचन करै छी। तँ हम मूर्ख कोना भेलहुँ?'

सुतापी कहलक—'अपने ठीक कहै छियै भगवन्! मुदा एहि मे हम की क' सकै छी?'

मोद्‌गल कहलखिन—'अहाँ सोचि तँ सकै छी। सोचू, अहाँक गुरु केँ सन्देह छलनि तँ हमर जाँच करितथि। सवाल-जबाब करितथि। तखन किछु कहितथि। से तँ ओ केलनि नहि। एना मे तँ अनुशासन टूटि जाएत। खोजी सब भटकि जेता। सत्य केँ तँ पहिने पेबाक चाही, तखन बजबाक चाही। छै कि नहि?'

सुतापी—'जी, छै।'

मोद्‌गल—'तँ सुनू। हम एक प्रश्न पुछै छियनि। अहाँ जा क' हुनका कहियनु। जँ ओ जवाब नहि द' सकला तँ हुनकर नाश भ' जेतनि।'

बाहर बाछी फेर पुकार लगेलक—'बाँऽऽ बाँऽऽऽ'

सुतापी भयभीत भ' गेल। सहमि क' बाजल—'हुनका माँफ क' दियनु भगवन्!'

मोद्‌गल तुरन्त सहज भेला। कहलखिन—'नै वत्स, हुनके हित लेल कहै छी। एही मे हुनकर भलाइ छनि।'

सुतापी मोनेमोन सोचलक—जरूर कोनो नीके बात

हेतै। ऋषिक कहल सब बात मे मर्म होइ छै। ओकरा सब क्यो नै बुझि सकैए।

सुतापी अपन गुरुजीक मादे सोच' लागल। ओ ज्ञानी आदमी छथि। खूब नाम छनि। सब क्यो चिन्है छनि। मुदा ओ गँहीर नै छथि। ज्ञानी केँ तँ गँहीर हेबाक चाही। सबहक हित देखय, से ज्ञानी। सबहक भलाइ चाहय, से ज्ञानी। सब केँ अप्पन



बुझय। सबहक लेल सोचय। यैह कमी छनि हुनका मे।'

'अरे! हम तँ गुरुजीक निन्दा कर' लगलौं!' सुतापी कें अपन गलतीक भान भेलै। ओ पछताब' लागल। मोनेमोन गुरु सँ माफी माँग' लागल।

मोद्गल ओकर मलिन मुँह देखलखिन। सब बात ओ बुझि गेला। एहि बालक पर हुनका ममता भेलनि। ओ सोच' लगला—'यैह बच्चा सब तँ देशक आशा थिका। यैह सब तँ हमरो सब कें आगू बढ़ेता। हिनका सब कें तँ एखन सही-सही सुझाव चाही। गुरु तँ एहन हो जे हिनका सबहक आत्मा कें बलवान बनाबथि।'

आ एम्हर ई ग्लाव!!! हुनकर मोन फेर घोर भ' उठलनि।

ओ बजला—'हँ, सुनू वत्स! प्रश्न सुनू।'

सुतापी—'जी, कहल जाय।'

मोद्गल कहलखिन—'हुनका पुछबनि—एकटा 'क्यो' छथि। हुनका बारह टा मिथुन छनि। चौबीस योनि छनि। एक आँखि भृगु छथिन। दोसर आँखि अँगिरा छथिन। बुझनिहार हुनका शक्ति कहै छनि। हुनके

असरा पर सब किछु टिकल अछि। अहाँक गुरुजी बताबथि जे वास्तव मे ओ के छथि? हुनकर रहस्य की छनि? हुनका क्यो कोना पाबि सकैत अछि?'

कनेक रुकि क' फेर बजला—'आ, बाउ सुनू। ईहो बात हुनका कहि देबनि। ज्ञानक शासन सेहो शासन होइ छै। जे नै मानय, तकर सत्यानाश। ओ चाहे मोद्गल होथि तौं, चाहे ग्लाव होथि तौं। प्रश्नक उत्तर ओ जहिया चाहथि, तहिया देथि। खोज क' लेथि, तखन उत्तर देथि। मुदा उत्तर जँ नहि द' सकला तँ हुनकर नाश तय अछि। आब अहाँ जाउ।'

सुतापी हुनका प्रणाम केलक। तखन कुटी सँ बाहर निकलल।

ओकर मोन बहुत चिन्तित रहै।

कोना ई सब बात ओ अपन गुरुजी केँ कहत? जाहि गुरु सँ ज्ञान लेलक, ओ आइ संकट मे छथि। ओ करय तँ की करय? ओकरा कोनो रस्ता नहि भेटि रहल छलै। सोच' लागल—'हमरो गुरुजी तँ गुरु छथि। हुनको अपन शक्ति छथि। ज्ञान छनि। नहि अबैत हेतनि तँ खोज करता। कोनो रस्ता तँ निकलबे करतै!'

'मनुक्ख केँ मुदा, सोचि क' बजबाक चाही।

विचारि क' कोनो बात कहबाक चाही। विना बिचारने बाजब संकट के जड़ि थिक'—ओ सोचलक।

सुतापी अपन गुरु लग पहुँचल। ओ तामस सँ आगि बनल छला। किऐ सुतापी एत्ती काल मोद्‌गल लग मे रहि गेल? किऐ एत्ती काल ओकरा सँ गप केलक? ओ बुढ़बा कपटी अछि। कहीं ओकर मोन ने मोहि लेने हो! ग्लाव सुतापी केँ धोप' लगला।

सुतापी कहलकनि—'तामस नै कएल जाय गुरुदेव! बहुत पैघ संकट आब' बला अछि।'

ग्लाव—'की संकट आब' बला अछि?'

सुतापी—'अपने मोद्‌गल केँ मूर्ख कहने रहियनि?'

ग्लाव—'हँ। कहने रहियै।'

सुतापी—'किऐ कहलियनि?'

ग्लाव—'ओ वास्तव मे मूर्ख अछि। तेँ कहलियै।'

ई बात सुनि क' सुतापी आरो दुखी भेल। उदासी मे ओ मूड़ी निहुरा लेलक। फेर बाजल—'आब एहि बात केँ साबित कर' पड़त गुरुदेव!'

ग्लाव—'की साबित कर' पड़त?'

सुतापी—'येह जे ओ मूर्ख छथि।'

ग्लाव—'मतलब?'

सुतापी—'ओ एकटा प्रश्न पुछने छथि। अपने सँ उत्तर माँगै छथि।'

अगड़धत्त जकाँ ग्लाव उतारा देलखिन—'हे, हम ओकर कोनो प्रश्नक उत्तर नहि देबह। जे हमरा कहबाक छल, कहलियह।'

संकोचक संग सुतापी बाजल—'नहि गुरुदेव, हुनका उत्तर देबे उचित हेतै।'

ग्लाव भड़कि उठला—'किऐ? किऐ उचित हेतै? तोरा कहने?'

सुतापी कहलक—'से बात नहि छै गुरुदेव! ओ कहने छथि, उत्तर नहि देबै तँ अपनेक नाश भ' जाएत।'

आब ग्लाव केँ संकट के अन्दाज लगलनि। मोद्गल के शक्ति तँ ओ जनिते रहथि, खाली अपन पैघत्व के जमौटी करथि। ई बात सुनि क' हुनकर पिलही चौंकि गेलनि।

सुतापी एक दिस सँ सबटा बात हुनका कहलकनि। प्रश्न सेहो कहि देलकनि।

ग्लाव प्रश्नक उत्तर सोच' लगला। उत्तर हुनका अबैत रहितनि तखन ने मोन मे अबितनि। ओ पोथी-पतरा उनटाबय लगला। तीनू वेद मे उत्तर तकलनि। कतहु उत्तर नहि छल। ई तँ एक नवीन खोज छलै। पुरना पोथी मे ई कोना भेटितय?

भोर सँ दुपहर भेलै। तखन साँझ पड़ि गेलै। ग्लाव बड़-बड़ जतन केलनि। अछता-पछता क' किछु ऋषि सँ पुछबो केलखिन। मुदा, कतहु उत्तर नहि भेटलनि।

सगरो राति ग्लाव केँ निन्न नहि भेलनि। नाश के डर सँ हुनकर प्राण काँपाने। भरि राति नाशे के सपना देखलनि। हुनका अपन नीचता देखार पड़नि। कखनो अपन अछरकट्टू ज्ञान मोन पड़नि। अपने पर अपना दया लागनि। अपन हिस्सक पर तामस उठनि। जेना-जेना राति बितैत गेल, ग्लाव के बेचैनी बढ़ैत गेलनि।

भोर भेल। ग्लाव अतिथिशाला सँ बहरेला। हुनकर आँखि फूलल छलनि। बताह-सन देखार पड़थि। भरिये राति मे मुँहेँठ पीयर भ' गेल रहनि।

ओ अपन सबटा शिष्य केँ बजौलनि। सब क्यो जुटि गेल तँ ग्लाव बजला—'हम मोद्गल केँ मूर्ख

कहने रहियनि। ओ जे प्रश्न पुछलनि, तकर उत्तर हम नहि द' सकलहुँ। आब हम हुनकर शिष्य बन' जा रहल छी।'

हुनकर गप सुनि क' सब क्यो चकित रहि गेल। एकटा शिष्य पुछलकनि—'तखन आब हमरा सब के कोन उपाय हेतै गुरुदेव?'

ग्लाव कहलखिन—'तों सब आब अपना-अपना घर घुरि जा। कोनो दोसर गुरु टेबि लैह।'

ओतय सँ बहरा क' ग्लाव नदी-तट पहुँचला। ओतय ओ स्नान केलनि। पूजा केलनि। तखन समिधा जमा कर' लगला। समिधा हवन के लकड़ी केँ कहल जाइ छै। नबका शिष्य तखने बनाएल जाइ छल, जँ ओ समिधाक संग गुरु लग हाजिर होअए। ओइ दिन मे यैह रेबाज छल।

समिधा ल' क' ग्लाव मोद्‌गल लग पहुँचला। तै काल मे ओ चिन्तन-मनन करै छला। ग्लाव हुनका आगू जा क' ठाढ़ भेला।

मोद्‌गल के नजरि हुनका पर पड़लनि। ओ पुछलखिन—'की? कहल जाय।'

ग्लाव सकुचैत बजला—'हम अपनेक शरण मे आएल छी। हमरा शिष्य कबूल कएल जाय।'

छन भरिक लेल मोद्गल गुम भ' गेला। किछु विचार कर' लगला। तखन बजला—'देखू, अहाँ शुद्ध मन सँ एतय नहि आएल छी। ई बात सब क्यो जनै छथि। शिष्य बनबाक कोनो बेगरता नहि छै। अपन मन केँ निर्मल बनाउ। बस एतबे कहब।'

ग्लाव बजला—'मुदा भगवन्, हम तँ समिधा ल' क' आएल छी। हमरा क्षमा कएल जाय। शरण लगाएल जाय।'

आब कोन उपाय छलै? मोद्गल कहुना राजी भ' गेला। हवन भेलै। ग्लाव केँ शिष्य कबूल क' लेलनि।

सब किछु भ' गेल तँ उपदेश पेबाक बेर एलै। ग्लाव हाथ जोड़ि क' गुरुक चरण मे बैसला। मुदा, मोद्गल कहलखिन—'देखू ग्लाव! एखन अहाँक गुरु ई गाय भेली। एक साल धरि अहाँ हिनकर सेवा करू। हिनका सँ ज्ञान सीखू। साल भरिक बाद हम अहाँ केँ उपदेश देब।'

ओहि दिन सँ ग्लाव गोमाताक सेवा मे लागि गेला। आगू-आगू गाय, पाछू-पाछू ग्लाव। भोर हुअय तँ गायक

संग, साँझ पड़य तँ गायक संग। हुनकर सुतब-जागब गायेक लेल होइ छलनि।

ग्लाव खूब मेहनति करथि। गायक हरेक बातक ध्यान राख' पड़नि। गाय किछु बजैत नहि छली। चुपचाप रहि क' ओ उपदेश देथिन। तकरा बूझ' पड़नि। ताहि सँ ज्ञान सीख' पड़नि।

एहिना बितैत-बितैत एक साल बीति गेलै। तखन ग्लाव गुरु लग मे हाजिर भेला। कहलखिन—'भगवन्! साल भरि हम गोमाताक सेवा केलहुँ। आब आगू हुकुम हो।'

मोद्गल पुछलखिन—'गोमाता सँ किछु ज्ञान भेटल?'

ग्लाव—'जी, भेटल।'

मोद्गल—'की भेटल?'

सकुचैत ग्लाव कहलखिन—'गाय केँ घमंड नै छनि गुरुदेव! घमंड फालतू चीज छी। आब अपने हमरा ज्ञान देल जाय।'

मोद्गल कहलखिन—'हम अहाँ केँ ज्ञान दी—बड़ नीक बात। मुदा तकर समय एखन नहि आएल अछि ग्लाव। आब एक साल अहाँ बेंग सँ ज्ञान सीखू।'

'जे आज्ञा' कहि क' ग्लाव विदा भेला। आब ओ बेंग महराजक सेवा मे लगला। धार-पोखरि के तट पर। जलामय बाध-बोन मे। खत्ता-डाबर घुमल घुरथि। बेंग महराजक सेवा तँ आरो कठिन छल। कोना हुनकर बोली बुझता, ताही सोच मे हरदम रहथि। कोना हुनकर भावना पकड़ता, तकरे गुनधुन मे लागल रहथि। सगरो दिन तते खटनी होइन जे सूखि क' काँट भ' गेला।

एहिना बितैत-बितैत एक साल आरो बीति गेल।

तखन ग्लाव फेर गुरु लग मे हाजिर भेला। गुरु महराज ओहि काल मे गाछ-बिरीछ मे पानि पटबै छला। ग्लाव हुनका प्रणाम केलकनि।

मोद्‌गल पुछलखिन—'बेंग महराज किछु सिखेलनि?'

ग्लाव—'जी, बहुत किछु सिखेलनि।'

मोद्‌गल—'की सिखेलनि?'

ग्लाव—'ओ जीवन के पारखी होइ छथि भगवन्! केहनो हाल मे जीबि सकै छथि। ओ समय कें चिन्है छथि। दुर्दिन कें बरदास करै छथि। तकरा बदलैक भावना रखै छथि।'

मोद्‌गल कहलखिन—'ठीक बात छै!'

ग्लाव कें हिम्मत भेलनि। बजला—'आब अपने हमरा उपदेश देल जाय।'

मोद्‌गल किछु सोच' लगला। बजला—'तकर समय एखनो नहि आएल अछि ग्लाव!'

ग्लाव—'तखन की आज्ञा?'

मोद्‌गल भावुक भ' गेला। बजला—'एहि गाछ-बिरीछ कें देखू ग्लाव! जीवन सँ कते भरपूर! कते आनन्दित! हिनका सब सँ मनुख शिक्षा नहि ल' सकैए?'

ग्लाव चुप रहला। गाछ-बिरीछ कें निहारैत रहला।

मोद्‌गल बजला—'सीखू ग्लाव, हिनका सब सँ सीखू। असली ज्ञान यैह सब अहाँ कें द' सकै छथि।'

ओहि दिन सँ ग्लाव गाछ-बिरीछक सेवा मे लागि गेला।

एखन धरि ग्लाव बहुत विद्या सिखने छला। ओ सब आब हुनका अकारथ लाग' लगलनि। जे विद्या अपने धरि सीमित करय, से बेकार। जे ज्ञान जीव-जगत सँ अलग क' दियय, से बेकार। दुनियाँ हमरे पर तँ टिकल नहि अछि। एहि मे सबहक हिस्सेदारी छै। छोट-छीन चुट्टी-पिपरी हो तँ तकरो।

मोट-डाँट हाथी-घोड़ा हो तँ तकरो। नान्हि टाक दूभि सेहो दुनियाँ केँ सुन्दर बनेबाक अरमान राखैए। ई सब विचार ग्लावक मोन मे आबै छलनि।

गोमाताक सेवा सँ हुनका मे धीरज धरबाक गुण आएल छलनि। बेंग महराजक सेवा करैत-करैत ओ बड़े सम्वेदनशील बनला। तुच्छ जीव क्यो नहि होइत अछि। ककरो छोट नहि मानी। सबहक भीतर विराट जीवन छै। ई बोध हुनका भीतर जगलनि।

आब ओ गाछ-बिरीछक संगत मे एला। हुनका अनुभव होइन जे वनस्पति सँ पैघ क्यो मित्र नहि। सदति ओ हमरा-अहाँक हिते चाहैए। ओ सब हमर भाइ-बन्धु थिका। हमर कुलक रक्षक थिका। मनुखक असली गुरु थिका। जीवनक रहस्य वैह सब प्रकट करै छथि।

की थिक जीवनक रहस्य? ग्लाव बेर-बेर चिन्तन करथि। गाछ-बिरीछ लग बैसथि। हुनका सब सँ गप-सप करथि। हुनकर भाषा केँ बुझबाक प्रयास करथि। गाछ केँ करेज मे साटि लेथि। हुनकर धड़कन सुनथि। हुनकर प्रेम महसूस करथि।

ग्लाव भाँति-भाँति के बीज बुनै छला। ओहि बीज

सँ आँकुर बहराइ छलै। ओ आँकुर पैघ होइ छल। गाछ बनि जाइ छल। ओ गाछ फुलाबय। फड़य। ओकर जीवन ककरा लेल? दस लोकक हित लेल। मनुखक बढ़ती एक दिन रुकि जाय। मुदा, गाछ जिनगी भरि बढ़िते जाय। से किऐ? तँ दस लोकक हित लेल। ग्लाव ई सब बात देखथि। महसूस करथि। हुनका अनुभव होइन—जेना-जेना गाछ-बिरीछ बढ़ैए, तेना-तेना ओ अपनो बढ़ि रहला अछि। गाछक जीवन हुनको जीवन छियनि।

एक दिन के बात थिक। ग्लाव अपन गाछ-बिरीछ मे रमल रहथि। एक वृक्षक छाती मे लागल ठाढ़ रहथि। गाछ सब केँ निहारैत रहथि कि अचानक कानय लगला। भरि आँखि नोर आबि गेलनि। लागल जेना अपन कोनो गलती के हुनका बोध भेल होइन। लागल जेना ओ हिनका सब सँ माफी माँगि रहल होथि। सबहक आभार गछैत होथि। लागल जेना एक्के क्षण मे किछु हेरायल वस्तु हुनका भेटि गेल होइन।

हुनकर नोर थमबाक नामे ने लैत छल। हबोढकार कानि रहल छला। बकौर से लागल रहनि। अपने-अपने कानथि आ अपने-अपने बाजथि—हमरो जीवन की

कोनो जीवन छल! हमरो जीयब की कोनो जीयब छल!

हुनकर कानब बहुत कारुणिक छलै। गाछ-बिरीछ सेहो हुनकर नोर सँ जेना विचलित भ' गेला। हुनकर पीड़ा मे सब एकमएक भ' गेला। एम्हर ग्लाव कानै छला। ओम्हर समुच्चा जंगल कानै छल। अजब दृश्य उपस्थित छलै।

संजोगक बात! ओही काल मे घुमैत-टहलैत मोद्गल गुरु ओहि ठाम आबि पहुँचला। अपना आँखि सँ ओ ई दृश्य देखलनि। ओ अभिभूत भ' गेला। ओ ग्लाव लग गेला। हुनका भरि पाँज केँ ध' लेलनि। हृदय सँ लगा लेलनि।

ग्लावक कानब एखनो थमि नहि रहल छल। कानैत-कानैत ओ गुरुक चरण मे खसि पड़ला। गदगद भ' क' पुकार लगबय लगला–'भेटि गेल गुरुदेव! हमरा सब किछु भेटि गेल।'

महर्षि मोद्गल देखलनि–ग्लाव के मुखमण्डल पर ज्ञानक अखण्ड प्रकाश पसरल रहनि।

•••



जन्म : 15 जनवरी, 1966
पता : बदरिकाश्रम, महिषी
सहरसा, बिहार

तारानन्द वियोगी

मैथिली एवं हिन्दीक समर्थ कवि, कथाकार समालोचक।

प्रकाशित पोथी : हस्तक्षेप, अतिक्रमण, शिलालेख, कर्मधारय आदि।



मैथिली लोक रंग
मधुबनी - दिल्ली



ISBN : 978-81-904941-2-0

मूल्य : पन्द्रह टाका